8. यक्ष प्रश्न

- ईश्वर क्या है?
- जन्म के पहले हम क्या थे?
- मृत्यु के बाद हमारा क्या होगा?
- ईश्वर अगर है तो क्या उसे देखा जा सकता है?

- स्वामी विवेकानंद

प्रश्न

1. ये प्रश्न किसके मन में उत्पन्न हुए थे?
2. स्वामी विवेकानंद ने इन प्रश्नों का उत्तर किस से पूछा होगा?
3. इनके जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

उददेश्य

कहानी विधा के माध्यम से कहानी लिखने का ज्ञान प्राप्त करना। जिज्ञासा व दार्शनिक प्रश्नों के माध्यम से बौद्धिक विकास करना।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ का चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। समझ में न आने वाले शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. समझ में न आने वाले शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए और पाठ समझिए।

SCERT TELANGANA

यह घटना महाभारत काल की है। उस समय पांडव द्रौपदी सहित बारह वर्ष के वनवास पर थे। एक दिन अचानक एक ब्राह्मण पांडवों के पास आया। वह अपनी व्यथा सुनाते हुए कहने लगा, ''एक हिरण मेरी अरणी की लकड़ी लेकर भाग गया। अब मेरे पास यज्ञ की अग्नि पैदा करने के लिए दूसरी लकड़ी नहीं है। कृपया मेरी लकड़ी वापस दिला दो।''

पांडव ब्राह्मण की व्यथा से प्रभावित हुए। इसलिए वे हिरण की खोज में निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें हिरण दिखायी दिया। उसे पकड़ने के लिए वे आगे बढ़े परंतु हिरण उनकी आँखों से पुनः ग़ायब हो गया। हिरण की खोज में भटकते हुए वे थक गये और विश्राम के लिए एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। प्यास के मारे सभी के कंठ सूख रहे थे। युधिष्ठिर ने नकुल को पानी की तलाश में भेजा। नकुल पानी की खोज में निकला और चलते-चलते एक सरोवर के पास पहुँचा। सरोवर देखकर उसका मन प्रफुल्लित हो उठा। वह सोचने लगा कि क्यों न मैं पहले अपनी प्यास बुझा लूँ। वह पानी पीने के लिए उद्यत ही हुआ था कि सहसा एक आवाज़ गूँज उठी, ''ऐ नकुल, पानी पीने का दुस्साहस न करें। सावधान! पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो।'' नकुल चेतावनी की परवाह न करके पानी पीने लगा। पानी पीते ही वह भूमि पर गिर पड़ा। बहुत देर तक नकुल के न लौटने पर युधिष्ठिर को चिंता सताने लगी। उन्होंने उसकी खोज में बारी-बारी से सहदेव, अर्जुन और भीम को भेजा। यक्ष की चेतावनी की उपेक्षा करते हुए सभी ने सरोवर तट पर प्यास बुझाने का प्रयास किया और नकुल की भाँति धरा पर गिर गये। जब कोई भी लौटकर न आया तो युधिष्ठिर स्वयं चिंतित अवस्था में उनकी खोज में निकल पड़े। तृषा से व्याकुल युधिष्ठिर पहले अपनी प्यास शांत करने के लिए सरोवर की ओर गये। वहीं युधिष्ठिर को अपने भाई धरा पर पड़े दिखायी दिये। जैसे ही वे आगे बढ़े तो उन्हें भी वही आवाज़ सुनायी दी। सावधान! तुम्हारे भाइयों ने मेरी चेतावनी की ओर ध्यान नहीं दिया। इसलिए उनकी यह दशा हुई। यदि तुम पानी पीना चाहते हो तो पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर

SCERT TELANGANA

दो, फिर अपनी प्यास बुझाना। युधिष्ठिर ने कहा श्रीमान! आप प्रश्न कीजिए, मैं उत्तर देने के लिए तैयार हूँ।

यक्ष – मनुष्य का साथ कौन देता है?

युधिष्ठिर – धैर्य ही मनुष्य का साथ देता है।

यक्ष – वह कौन-सा शास्त्र है, जिसका अध्ययन करके मनुष्य बुद्धिमान बनता है?

युधिष्ठिर – कोई भी शास्त्र ऐसा नहीं है। महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है।

यक्ष – भूमि से भारी चीज़ क्या है?

युधिष्ठिर – संतान को कोख में धारण करनेवाली माता भूमि से भी भारी होती है।

यक्ष – आकाश से भी ऊँचा कौन है?

युधिष्ठिर – पिता।

यक्ष – हवा से भी तेज़ चलनेवाला कौन है?

युधिष्ठिर – मन।

यक्ष – विदेश जानेवाले का साथी कौन होता है?

युधिष्ठिर – विद्या।

यक्ष – मरणासन्न वृद्ध का मित्र कौन होता है?

युधिष्ठिर – दान, क्योंकि वही मृत्यु के बाद अकेले चलने वाले जीव के साथ-साथ चलता है।

यक्ष – सुख क्या है?

युधिष्ठिर – जो शील और सच्चरित्र पर स्थित है।

यक्ष – सबसे तुच्छ क्या है?

युधिष्ठिर – चिंता

यक्ष – किसके छूट जाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है?

युधिष्ठिर – अहंभाव के छूट जाने पर।

SCERT TELANGANA

इसी प्रकार यक्ष ने कई अन्य प्रश्न भी किये और युधिष्ठिर ने उन सबके ठीक-ठीक उत्तर दिये। अंत में यक्ष बोला- ''राजन्! मैं तुम्हारे मृत भाइयों में से एक को जीवित कर सकता हूँ। तुम जिस किसी को भी चाहो, वह जीवित हो जाएगा।''

युधिष्ठिर ने पलभर सोचा कि किसे जीवित कराऊँ? थोड़ी देर रुककर बोले- ''मेरा छोटा भाई नकुल जी उठें।''

युधिष्ठिर के इस प्रकार बोलते ही उन्होंने पूछा - ''युधिष्ठिर! दस हज़ार हाथियों के बलवाले भीमसेन को छोड़कर तुमने नकुल को जीवित करवाना क्यों ठीक समझा?''

युधिष्ठिर ने कहा- ''यक्षराज! मैंने जो नकुल को जीवित करवाना चाहा, वह सिर्फ़ इसी कारण कि माता कुंती का बचा हुआ एक पुत्र मैं हूँ, मैं चाहता हूँ कि माता माद्री का भी एक पुत्र जीवित हो उठे। अतः आप कृपा करके नकुल को जीवित कर दें।''

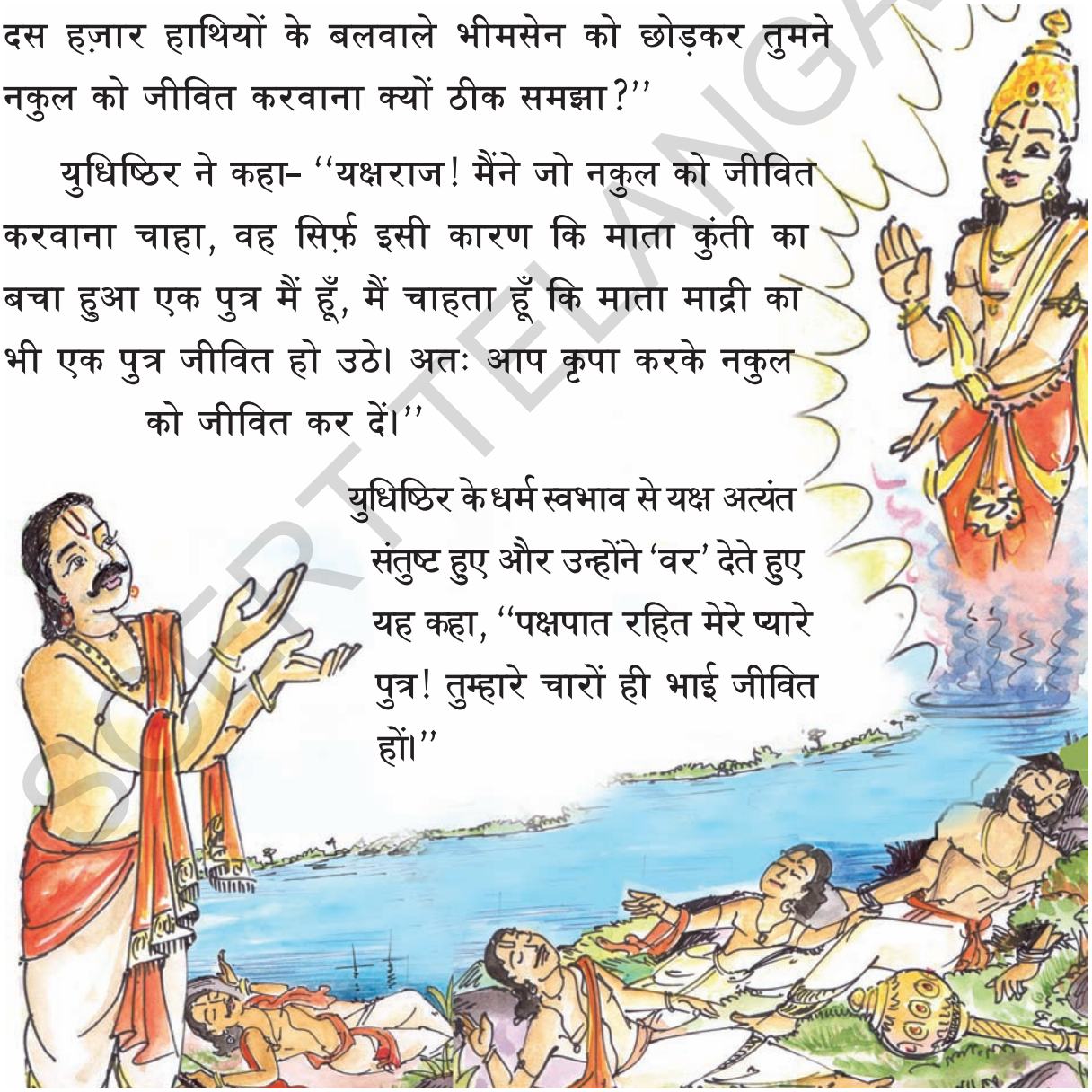

युधिष्ठिर के धर्म स्वभाव से यक्ष अत्यंत संतुष्ट हुए और उन्होंने 'वर' देते हुए यह कहा, ''पक्षपात रहित मेरे प्यारे पुत्र! तुम्हारे चारों ही भाई जीवित हों।''

SCERT TELANGANA

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर सोचकर दीजिए।

1. युधिष्ठिर के बारे में बताइए।
2. युधिष्ठिर की जगह तुम होते तो किसे जीवित करवाना चाहते और क्यों?

(आ) पाठ के आधार पर वाक्यों को सही क्रम दीजिए।

1. युधिष्ठिर ने नकुल को पानी की तलाश में भेजा। ( )
2. पक्षपात रहित मेरे प्यारे पुत्र! तुम्हारे चारों ही भाई जीवित हो। ( )
3. तुम जिस किसी को भी चाहो, वह जीवित हो जाएगा। ( )
4. पांडव ब्राह्मण की व्यथा से प्रभावित हुए। (1)

(इ) गद्यांश पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

रानी सुदेष्णा का भाई कीचक बड़ा ही बलिष्ठ और प्रतापी वीर था। मत्स्य देश की सेना का वही नायक बना हुआ था। उसने अपने कुल के लोगों को साथ लेकर मत्स्याधिपति बूढ़े विराटराज की सत्ता पर अप्रत्यक्ष रूप से अधिकार कर लिया था। कीचक की धाक लोगों में ऐसी बनी हुई थी कि लोग कहा करते थे कि मत्स्य देश का राजा तो कीचक ही है।

1. रानी सुदेष्णा का भाई कौन था?
2. विराट किस देश के राजा थे?
3. देश की सेना का नायक कौन बना हुआ था?

(ई) इन प्रश्नों के उत्तर तीन वाक्यों में दीजिए।

1. ब्राह्मण पांडवों के पास आकर कौन सी व्यथा सुनाने लगा?
2. युधिष्ठिर को सरोवर के पास कौनसी चेतावनी सुनायी दी?
3. युधिष्ठिर ने नकुल को जीवित करवाने का अनुरोध क्यों किया?
4. यक्ष ने युधिष्ठिर के सद्गुणों से मुग्ध होकर कौन-सा वर दिया?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. धैर्य मनुष्य का साथ कैसे देता है?
2. अच्छी संगति से क्या लाभ है?
3. नकुल के लिए जीवनदान माँगकर युधिष्ठिर ने सही किया या गलत? अपने उत्तर का कारण बताइए।

(आ) यक्ष के किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर अपने दृष्टिकोण के आधार पर लिखिए।

(इ) यदि यक्ष के स्थान पर आप होते तो कौन-कौन से प्रश्न पूछते?

(ई) 'यक्ष प्रश्न' पाठ आपको क्यों अच्छा लगा? अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

(अ) इन शब्दों के वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. तृषा 2. अग्रसर 3. चेतावनी 4. दुस्साहस 5. पक्षपात

(आ) पर्यायवाची शब्द पहचानकर रेखा खींचिए।

धरती	तात	जनक	बाप
पिता	खोज	अन्वेषण	आविष्कार
तलाश	वायु	पवन	समीर
हवा	भूमि	धरा	पृथ्वी

(इ) निम्न शब्दों पर ध्यान दीजिए। दो शब्दों के मेल में हुए विकार को समझिए।

अत्यंत	यद्यपि	दुस्साहस	निस्संदेह	निस्सार	मरणासन्न
पुस्तकालय	सच्चरित्र	सज्जनता	प्रत्यक्ष	प्रत्येक	प्रत्यंग
प्रत्युपकार	प्रत्युत्तर	अत्यंत	अत्याचार	अत्युत्साह	दिनांक

मरण	+	आसन्न	=	मरणासन्न	इस तरह दो शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनता है। इसमें वर्णों के जुड़ने के कारण विकार उत्पन्न होता है। इसे संधि कहते हैं। संधि के प्रकार- 1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि
प्रति	+	अक्ष	=	प्रत्यक्ष	
सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र	
दुः	+	साहस	=	दुस्साहस	

SCERT TELANGANA

दो स्वरों के बीच विकार हो तो स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के प्रकार -

1. दीर्घ संधि	जैसे-	पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, कवि + इंद्र = कवींद्र, गुरु + उपदेश = गुरूपदेश,
2. गुण संधि	जैसे-	महा + ईश्वर = महेश्वर, पर + उपकार = परोपकार, महा + ऋषि = महर्षि,
3. वृद्धि संधि	जैसे-	एक + एक = एकैक, महा + औषधि = महौषधि
4. यण संधि	जैसे-	प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष, सु + आगत = स्वागत मातृ + अनुमति = मात्रनुमति
5. अयादि संधि	जैसे-	ने + अन = नयन , भो + अन = भवन

व्यंजन संधि में व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से विकार होता है। जैसे-

जगत् + ईश = जगदीश,	दिक् + गज = दिग्गज,	वि + सम = विषम
वाक् + ईश = वागीश,	सत् + जन = सज्जन,	षट् + दर्शन = षड्दर्शन

विसर्ग संधि में विसर्ग का परिवर्तन समझिए-

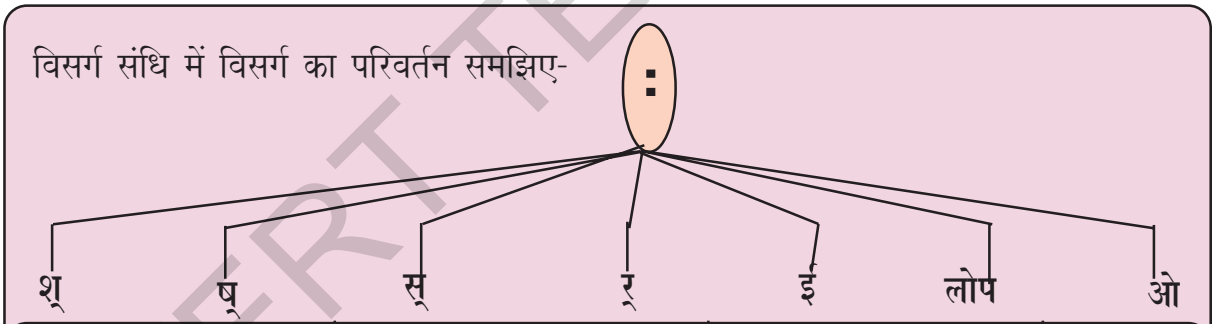

निः + चल निश्चल	निः + कपट निष्कपट	निः + संदेह निस्संदेह	निः + भय निर्भय	निः + रस नीरस	निः + शुल्क निशुल्क	**मनः + रंजन** मनोरंजन

परियोजना कार्य

पंचतंत्र की नीतिप्रद कहानियों से किसी एक कहानी का संग्रह कीजिए।

जो कर्त्तव्य से बचता है, लाभ से वंचित रहता है। - पार्कर

SCERT TELANGANA